ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा मेर्मा शवसस्पते। ऋग्वेद-1/11/2
हे शक्तिपुंज! हम किसी से न डरें भयभीत न हों।
O God ! The embodiment of strength make us fearless, lest we should be frightend of anyone.

वर्ष 38, अंक 48 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 अक्टूबर, 2015 से रविवार 18 अक्टूबर, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान एवं आर्य समाज कीर्तिनगर के सहयोग से
एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण एवं अभ्यास कार्यशाला आरम्भ

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) की प्रेरणा से आर्य समाज कीर्ति नगर नई दिल्ली के सौजन्य से दिनांक 10 अक्टूबर 2015 को आर्य समाज कीर्ति नगर में एकरूप यज्ञ प्रशिक्षण व अभ्यास कार्यशाला का शुभारम्भ कालीकट केरल के ब्रह्मा एम. आर. राजेश व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान धर्मपाल आर्य जी के कर कमलों द्वारा किया गया। कार्यक्रम में एम.डी.एच. ग्रुप के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी ने पधार कर सभी प्रशिक्षणार्थियों को आशीर्वाद प्रदान किया, अतिथि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री शिव कुमार मदान, श्री ओम प्रकाश आर्य एवं संयोजक श्री सतीश चड्ढा जी ने कार्यशाला को सफल बनाने के लिए सभी महानुभावों का धन्यवाद किया। **-सतीश चड्ढा**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन कालीकट (केरल)
एक वर्षीय अग्निहोत्र पाठ्यक्रम पूरा करने वाले शिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित

कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन कालीकट में आचार्य श्री एम. आर. राजेश के मार्गदर्शन में एक वर्षीय बृहद अग्निहोत्र पाठ्यक्रम पूरा करने वाले शिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया, कार्यक्रम का उद्घाटन सांसद सदस्य श्री एम. के. रागवन ने दीप प्रज्ज्वलन से किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य द्वारा प्रशिक्षण पूरा करने वाले शिक्षार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किये गये एवं सांसद श्री एम.के. रागवन और बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष को वेदों का सैट प्रदान किया गया। **-संवाददाता**

प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी एवं राजनीतिज्ञ नवजोत सिंह सिद्धू ने करवाया हवन-यज्ञ

प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी एवं राजनीतिज्ञ नवजोत सिंह सिद्धू द्वारा अपने घर पर हवन-यज्ञ करवाया गया। कुछ सिखों ने उनका यह कहकर आलोचना की कि हवन-यज्ञ का सिख पंथ में कोई स्थान नहीं हैं। हम अपने सिख भाइयों को अपने गौरवशाली इतिहास से परिचित करवाना चाहते हैं कि सिख गुरुओं की हवन-यज्ञ में पूर्ण आस्था थी। स्मरण रहे कि गुरु गोविन्द सिंह ने खालसा की स्थापना करते समय यज्ञ करने के पश्चात् ही पंच प्यारों का

आवाहन किया था।

सिख पंथ में यज्ञ (होम) का वैसा ही महत्त्व स्वीकार किया गया है जैसा कि हिंदू धर्म के अन्य वर्ग संप्रदायों में प्रचलित हैं। गुरुवाणी में यज्ञ- महिमा का उल्लेख अनेकों स्थानों पर मिलता है जैसे-

डॉ. विवेक आर्य

तित धोए ''होम'' जदा सद पूजा।
पइयै कारण सो है।।
(वार माफ म.१ गु.प्र. साहिब)
अर्थात् इस घृत से हवन, यज्ञ और पूजा कार्य सुसंपन्न होता है।
होम जग उरब तप पूजा,
कोटि तीर्थ इसनान करीजा।
चरण कमल निमला रिदै धारे,
गोविंद जपत सभि कारज।।
(प्रभाती म.५गु.प्र.)
अर्थात्- पवित्र हवन, यज्ञ, तप, पूजा, तीर्थ स्नान आदि शुभकर्म मनुष्यों को करने चाहिए।

...शेष पेज 5 पर

गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् का द्वितीय वार्षिकोत्सव
दिनांक 25 अक्टूबर 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से संचालित गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् (लघु गुरुकुल) दिनांक 25 अक्टूबर 2015 को अपना द्वितीय वार्षिकोत्सव का आयोजन आर्य समाज पंखा रोड सी ब्लॉक जनकपुरी नई दिल्ली में कर रहा है। कार्यक्रम विवरण पृष्ठ 8 पर देखें।

सावधान भगवान सो रहे हैं?
विशेष संपादकीय-पढ़ें पृष्ठ 2 पर

12 वां आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन...
पढ़ें पृष्ठ 7 पर

दर्द अभी क्यों...?
विशेष लेख पढ़ें पृष्ठ 4 पर

स्वाध्याय

सर्वदृष्टा

य एक इत् तमु ष्टुहि कृष्टीनां विचर्षणिः। पतिर्जज्ञे वृषक्रतुः।।

–ऋ. 6/45/16

ऋषिः- **बार्हस्पत्यः शंयुः।।** देवता–**इन्द्रः।।** छन्दः-**निचृद्गायत्री।।**

शब्दार्थ- यः एकः इत् - जो एक ही है और जो कृष्टीनाम्- मनुष्यों का विचर्षणि :- सर्वद्रष्टा और वृषक्रतुः- सर्वशक्तिमान् पतिः- पालक जज्ञे-हुआ है तं उ- उसकी ही स्तुहि- तू स्तुति कर।

विनय- हे मनुष्य! तू किस-किसकी स्तुति करता फिरता है? संसार में तो एक ही स्तुति के योग्य है। संसार में हम मनुष्यों का एक ही पति, पालक और रक्षक है। हे मनुष्य! तू न जाने किस-किसको अपना पालक समझता है और उस-उसकी स्तुति करने लगता है। कहीं तू रुपये-पैसेवाले व्यक्ति को अपना रक्षक समझता है, कहीं तू किसी लब्धप्रतिष्ठ रोबदाबवाले व्यक्ति को अपना स्वामी बनाकर रहता है, कहीं तू किसी दार्शनिक व कवि की प्रज्ञा व प्रतिभा के स्तुति-गीत गाने लगता है, उनके ज्ञान व कवित्व पर तू मोहित रहता है। संसार में ऐसे भी मनुष्य बहुत हैं जो किन्हीं जीवित व जीवरहित आकृतियों के सौन्दर्य को देखकर ही ऐसे मोहित हो जाते हैं कि उनका मन उस सौन्दर्य की प्रशंसा करता नहीं थकता, परंतु संसार में मनुष्य की स्तुति के पात्र बहुत नहीं हैं। एक ही है, केवल एक ही है और वह इन सब स्तुत्य वस्तुओं का एक स्रोत है। सैकड़ों की स्तुति न कर - इन शाखाओं की स्तुति करने से कल्याण नहीं होता-रक्षा नहीं मिलती-रूप, रस आदि ऐन्द्रियक विषयों की स्तुति तो मनुष्य का विनाश ही करती हैं, पालन कदापि नहीं। इनकी स्तुति तो अति-अज्ञानी पुरुष ही करते हैं, परंतु जो संसार में हमारे अन्य रक्षा करने वाले बल, ज्ञान और आन्नद है (बली, ज्ञानी और सुखी लोग हैं) वे भी 'विचर्षणि', 'वृषक्रतु' नहीं हैं, उनमें ज्ञान और बल पर्याप्त नहीं है।' संसार के ये सब बल, ज्ञान और आनन्द तो उस एक, सच्चिनानन्द, महासूर्य की क्षुद्र किरणमात्र हैं। इन किरणों की स्तुति करने से अपने को बड़ा धोखा खाना पड़ेगा। हे मनुष्य! ये संसार के क्षुद्र बल और ज्ञान मनुष्य का पालन न कर सकेंगे, ये बीच में ही छोड़ देंगे। इनमें पूरा ज्ञान और बल नहीं है, अतः इनमें आसक्त होकर इनकी स्तुति मत कर। स्तुति उस 'मनुष्यों के एक पति' की कर, जो 'विचर्षणि' होता हुआ पालक है और 'वृषक्रतु' होता हुआ पालक है। वह एक-एक मनुष्य को विशेषतया देख रहा है। प्रत्येक मनुष्य को और उसके सब संसार को वह इतनी उत्तमता से देख रहा है कि प्रत्येक मनुष्य यही अनुभव करेगा कि उस मेरे प्रभु को मानो एकमात्र मेरी चिन्ता है और उस पालक पति का एक-एक क्रतु, एक-एक संकल्प, एक-एक कर्म ऐसा 'वृष' अर्थात् बलवान् है कि उसकी सफलता के लिए उसे दुबारा संकल्प व यत्न करने की आवश्यकता नहीं होती। हे मूर्ख मनुष्य! अपने उस 'पति' की ही स्तुति कर, उसकी सैंकड़ों किरणों की स्तुति छोड़कर उस वास्तविक सूर्य की ही स्तुति कर, उस एक की ही स्तुति कर।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

सावधान भगवान सो रहे हैं?

बहुत पहले एक कहानी सुनी थी एक आदमी अपने भोलू नाम के बैल पर सामान रखकर बेचा करता था। वर्ष बीतते चले गये एक दिन रास्ते में भोलू ने अपने प्राण त्याग दिये। उस आदमी ने यह सोचकर कि इसने तेरा जीवन भर साथ दिया उसे खुले में न छोड़कर सड़क के किनारे दफना दिया और उसकी कब्र पर बोर्ड लगाकर चला गया कि सावधान यहाँ भोलूशाह सो रहे हैं। बीस वर्ष पश्चात् वह आदमी वापस उसी रास्ते से गुजरा तो देखा सड़क के दोनों ओर जाम लगा था, उसने पैदल चलते हुए एक आदमी से पूछा, यहाँ इतना जाम किस वजह से लगा है? तो उसने बताया कि यहां मेला लगा है और भगवान भोलूशाह को जगा रहे हैं ताकि दुनिया से पाप मिट जाये। उस आदमी को बड़ा आश्चर्य हुआ उसने जाकर देखा उसके बैल की कब्र पर बड़ा मंदिर बना था और लोग पूजा-पाठ में लीन थे। खैर भोलूशाह जागे न जागे पर भगवान विष्णु जरुर जागने चाहिये वरना पौराणिक पोपलीला बंद हो जायेगी। अभी तक देशवासियों के सोने की बात आती थी। लेकिन आज जब सुप्रीम कोर्ट इस बात से परेशान हो गया कि भगवान विष्णु को कैसे जगाये। देश की सबसे बड़ी अदालत में पद्मनाभमन मन्दिर की सुनवाई के दौरान करीब एक घंटे चर्चा हुई कि भगवान विष्णु को जगाने के लिए मंत्र पढ़ा जाये या नहीं! देश के सबसे बड़े दो वकील के. के. वेणुगोपाल और गोपाल सुब्रहमण्यम ने इस पर बहस की। एमिकस गोपाल सुब्रहमण्यम ने कोर्ट में कहा कि वेंकेटेशाश्रुप्रभातम श्लोक मन्दिर में कहना जरुरी है ताकि भगवान जागे। वहीं त्रावणकोर के वकील वेणुगोपाल ने कहा कि भगवान सोए हैं। अतः इस श्लोक से नहीं जगाया जा सकता है। इस मामले की सुनवाई कर रहे जस्टिस ठाकुर ने कहा भगवान कैसे जागेंगे और किस श्लोक के आधार पर यह हम तय नहीं कर सकते। यह तो पुजारी को तय करना है कि भगवान किस मंत्र से जागते हैं और कोर्ट ने पुजारियों को निद्रेश दिया कि वह इस मामले में खुद तय करे कि भगवान किस श्लोक से जागते हैं। मैंने पूरी खबर पढ़कर कहा जिस देश में भगवान को जगाने के लिये भी कोर्ट का सहारा लेना पड़ता हो तो उस देश का आज नहीं तो कल विनाश निश्चित है। अरे मूर्खो अब तो जाग जाओ कब तक अपने धर्म महापुरुषों का मजाक बनाओगे!

पौराणिकों के अनुसार विष्णु को विश्व का पालनहार कहा जाता है। उसकी पत्नि लक्ष्मी है, विष्णु का निवास क्षीर सागर है, उसका शयन सांप के ऊपर है, उनकी नाभि से कमल उत्पन्न होता है जिसमें ब्रह्मा जी स्थित है कहते है। जब विष्णु ने रानी पद्मावती को देखा तो मोहित हो गये तब विष्णु ने धन के कुबेर से अपनी शादी के लिए पैसे उधार लिये थे जो उसके भक्त तिरुपति बालाजी के मन्दिर में मय ब्याज के 500 करोड़ प्रतिवर्ष उतार रहे हैं। वाह रे पाखंड अरब सागर, हिन्दमहासागर तो सुना था। सब जल थल इंसानों ने छान मारा पर क्षीर सागर न मिला और जब शादी पद्मावती से की थी फिर लक्ष्मी कहां से आयी? विज्ञान कहता है कमल कीचड़ में खिलता है पर पौराणिकों ने विष्णु की नाभी में खिला दिया और जब विष्णु भगवान सो रहे हैं तो वर्षो से मंदिर में चढ़ने वाला प्रसाद रुपया पैसा कहां जा रहा है? ऐसी एक घटना नहीं हैं अनेकों घटनाएं हैं। इन धर्म के तथाकथित ठेकेदारों ने तो जुनी इंदौर क्षेत्र के प्राचीन चिंतामण गणेश मंदिर में गणपति द्वारा मोबाइल पर अपने दूरदराजों के भक्तों की मनोकामनाएं सुनना तक बता डाला। सबसे बड़ी शर्म की बात तो यह है कि इन सारे मामलों में अनपढ़ लोगों के द्वारा पढ़े लिखे लोग ठगे जाते हैं। खुद अपने महापुरुषों का मजाक बना रहे हैं। फिर धर्म परिवर्तन का रोना रोते हैं। अरे धर्म गम्भीरता द्वारा चिंतन, मनन का विषय है न कि मजाक बनाकर अर्थ संग्रह करने की सदियां गुजर गई। देश दुनिया आधुनिक हो गयी। वैज्ञानिक ग्रहों तक घूम आये पर पांखड आज भी इंसानियत पर ज्यों का त्यों खड़ा हंस रहा है। कह रहा है हे भगवान को जगाने वाले मानव तू कब जागेगा तू जाग जा बस मैं तो कभी सोता नहीं हूं। इन पाखंडियों ने अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिये सत्य सनातन वैदिक धर्म का विनाश कर डाला अतः मुझे मत जगा मैं तो सदैव जाग कर तेरे कृत्य देख रहा हूँ तू खुद जाग और दुनिया को जगा।

-सम्पादक

ग्रन्थ परिचय

शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण

प्रश्न 1. 'शिक्षापत्रीध्वान्त निवारण' नामक ग्रन्थ किस विषय पर लिखा गया है?

उत्तर : यह ग्रन्थ सहजानन्द द्वारा प्रतिपादित स्वामी नारायण मत का खण्डन करने के लिए लिखा गया है। इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'स्वामी नारायणमत खण्डन' भी है।

प्रश्न 2. स्वामी सहजानन्द कौन थे?

उत्तर : इस मत के अनुयायी लोग सहजानन्द को नारायण का अवतार मानते थे।

प्रश्न 3. नारायण से अभिप्राय क्या है?

उत्तर : गोलोक और वैकुण्ठ में रहने वाले चतुर्भुज, द्विभुज और लक्ष्मीपति ईश्वर को वे नारायण मानते हैं।

प्रश्न 4. खण्डन किसको आधार मान कर किया गया है?

उत्तर : सहजानन्द द्वारा रचित शिक्षापत्री के अंशों को लेकर ही स्वामीजी ने असत्य और वेद के विरुद्ध बातों का खण्डन किया है।

प्रश्न 5. यह पुस्तक मूलतः कौन-सी भाषा में है?

उत्तर : मूलतः संस्कृत भाषा में है, उसका गुजराती अनुवाद स्वामी जी ने किया। उसी गुजराती से हिन्दी भाषा में भी अनुवाद किया गया है।

प्रश्न 6. इस ग्रन्थ का रचना काल क्या है?

उत्तर : ग्रन्थ की रचना का समाप्ति काल संवत् 1931, पौषमास की कृष्ण पक्ष की एकादशी (13 जनवरी सन् 1875, रविवार) का दिन है।

प्रश्न 7. इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण कब और कहां से प्रकाशित हुआ था?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद सहित प्रथम संस्करण संवत् 1933 के आरम्भ में 'ओरियण्टल प्रेस' बम्बई से प्रकाशित हुआ था।

प्रश्न 8. पुस्तक का गुजराती अनुवाद किसने किया था?

उत्तर : इसका गुजराती अनुवाद महर्षि के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा ने किया था।

साभार : महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी) वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें। -मो. 09540040339

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

वेदों में वर्णित भक्ति-तत्त्व

...वेद में 'भक्ति' और 'शक्ति' का अविच्छिन सम्बन्ध है। वेद में 'भक्त' प्रभु को तेज, वीर्य (शक्ति) बल, ओज और सहनशक्ति का भण्डार मानता हुआ, उससे तेज, वीर्य(शक्ति) बल और सहनशक्ति की कामना करता है जो भूत, भविष्यत् और वर्तमान का स्वामी है। ...

वेद पुस्तक न होकर ईश्वरीय ज्ञान है। सृष्टि के आदि ग्रन्थ वेद ही हैं। ऋषियों ने उस वेद रूपी ज्ञान के दर्शन किये हैं। इस विश्व का ज्ञान कराने वाला शब्द रूपी ब्रह्म वेद ही है। वेद का अर्थ ज्ञान है, अतः वेद सारे ज्ञान का राशिपुञ्ज है। मानव जीवन का परम लक्ष्य पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) की प्राप्ति करना है और पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति का सम्पूर्ण ज्ञान वेदों में निहित है। उसमें भी मोक्ष की प्राप्ति ही जीवन का परम लक्ष्य है तथा उसे प्राप्त करने के लिए परमेश्वर की भक्ति आवश्यक है ''भक्ति हृदय की उस भावना का नाम है जिसमें साधक जहां एक ओर पूर्णभाव से ब्रह्म में अनुरक्त हो और सर्वतोभावेन अपने को ब्रह्मार्पण करने वाला हो।'भक्ति' का लक्षण शास्त्रों में इस प्रकार किया गया है कि परमेश्वर में अविचल और एकान्तिक भावना तथा आत्मसमर्पण की 'उत्कट आकांक्षा' 'भक्ति' है। वस्तुतः वेद भक्ति के आदि स्रोत हैं। ईश्वर-भक्ति के सुगन्धित पुष्प वेद के प्रत्येक मंत्र में विराजमान हैं जो अपनी सुगन्ध से स्वाध्यायशील व्यक्तियों के हृदयों को सुवासित करदेते हैं। जीवात्मा को प्रेरित करती हुई ऋचा कहती है कि -प्रभु के अतिरिक्त तू अन्य किसी की स्तुति मत कर। भगवद्विरुद्ध किसी प्राणी, पदार्थ तथा परिस्थिति को हृदय में महत्त्व मत दे क्योंकि ऐसा करने से तू परमार्थ से भ्रष्ट हो जाएगा।2 प्रभु ही एक-मात्र अपने हैं अन्य सब पराये हैं, ऋचा में स्पष्ट वर्णित है- कि प्रभु अपने हैं, वह हमारे पिता, भ्राता और सखा है।।3 व्यक्ति अपने लिए क्या नहीं करता? पिता पुत्र के लिए, सखा सखा के लिए सहोदर भ्राता के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देने के लिए तैयार हो जाता है, यह लौकिक अनुभूति है। पारलौकिक अनुभूति तो पारमार्थिकी है, विशुद्ध सत्याधारित है। वह परमात्मा अपने भक्त के लिए असम्भव को भी सम्भव कर देते हैं। भक्ति सर्वव्यापक है। जैसे सृष्टि परमात्मा से प्रारम्भ होकर परमात्मा में ही लीन हो जाती है। उसी प्रकार सब साधना का प्रारम्भ भी भक्ति है और लक्ष्य भी भक्ति ही है। भक्ति का सब कोई अधिकारी इसलिये है कि भक्ति जीव का स्वरूप और धर्म है और ईश्वर पर निर्भर होना जीवात्मा का स्वभाव है जो भक्ति का बीज है। नास्तिक भी, जिसने जन्मभर ईश्वर का खण्डन किया है, यदि अकस्मात् घोर विपत्ति में पड़ता है तो ईश्वर की सहायता के लिये प्रार्थना करने लगता है, इससे सिद्ध होता है कि ईश्वर के सम्बन्ध का ज्ञान जीवात्मा के अभ्यन्तर में अवश्य वर्तमान रहता है। इस प्रकार जीव में सकाम भक्ति का प्रारम्भ हो जाता है। गीता में भगवान् श्री कृष्ण कहते हं कि चार प्रकार के पुण्यशील व्यक्ति ही परमात्मा की उपासना करते हैं उनमें या तो कोई दुःखी होता है या कोई वास्तविकता को जानने की इच्छा वाला या धन चाहने वाला या ज्ञानी बस ये परमात्मा का भजन करते हैं।4 वेद में 'भक्ति' और 'शक्ति' का अविच्छिन सम्बन्ध है। वेद में 'भक्त' प्रभु को तेज, वीर्य (शक्ति) बल, ओज और सहनशक्ति का भण्डार मानता हुआ, उससे तेज, वीर्य(शक्ति) बल और सहनशक्ति की कामना करता है। सृष्टि का जीव प्रभु से कामना करता है-

दृते दृंहमा मित्रस्य मा, चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे, मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे।5

जो भूत, भविष्यत् और वर्तमान का स्वामी है। विश्व या आकाश में व्याप्त होकर त्रिकाल का स्वामी है, निर्विकार है, आनन्दकन्द है, कैवल्यरूप सुखधाम है, उस महान् परमेश्वर को मैं प्रणाम करता हूं, जिस प्रभु की महिमा का गान यह सम्पूर्ण प्रकृति कर रही है-

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा, यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।

यस्येमाः प्रदिशोयस्य बाहू, कस्मै देवाय हविषा विधेम।।6

श्रीमद्भागवत में श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि मनुष्य का तो कहना ही क्या? भक्ति के अधिकारी तो पशु, पक्षी आदि भी हैं-

केवलेन हि भावेन गोप्यो गावो नगामृगाः। येऽन्ये मूढधियो नागाः सिद्धा मामीयुरञ्जसा।।7

प्रभु की महिमा महान् है। अणु-अणु में उसकी सत्ता विद्यमान ह। ऋषि कहता है कि - हे मनुष्य! यदि तू दुःखों से छूटना चाहता है तो तू उस सर्वव्यापक परमात्मा की भक्ति करके परमतत्व को प्राप्त कर जिसकी महिमा का वर्णन सकल ब्रह्माण्ड कर रहा है।

इस प्रकार से वेदों में वर्णित भक्ति-तत्व प्रचुर मात्रा में अनेक स्थलों पर अंकित है। सफल जीवन के लिए वेदों में हमारी श्रद्धा, वेदों के स्वाध्याय की ओर प्रवृत्ति और वेदों की रक्षा परमावश्यक है। वेदों के प्रचार और प्रसार से ही हमारे देश तथा विश्व का कल्याण सम्भव है।

-श्री शम्मी कुमार
(शोधछात्र, पंजाब विश्व विद्यालय) साभार : विश्वज्योति

.....

1. सा पुरानुरक्तिरीश्वरे, शाण्डिल्यसूत्र 1.1.1। 2. ऋक्. 8.1.1, अथर्व,20.85,1। 3. ऋ. 1.26.3.। श्रीमद्भगवद्गीता 7.16। 5. यजुर्वेद 36.18। 6. वही, 25.12। श्रीमद्भागवत 11.12.8

आर्य समाज नीमच द्वारा हिन्दी दिवस सम्पन्न

आर्य समाज नीमच द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2015 को सप्तम हिन्दी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिधि श्री के. एल. बामनिया प्राचार्य उत्कृष्ठ विद्यालय नीमच एवं अध्यक्षता श्री अर्जुन लाल नरेला प्रधान आर्य समाज नीमच ने की। इस अवसर पर शहर के आर्य परिवारों के विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र आदि देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर नीमच की साहित्यिक प्रतिभा 81 वर्षीय श्री रमेश चन्द्र अग्रवाल जी को चतुर्थ हिन्दी आर्य रत्न से सम्मानित किया गया। **-मंत्री**

संस्कृतम्

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् (आरोग्यम्)

संसारं सर्वे जनाः सुखार्थं प्रयतन्ते। मनुष्यः तदैव सुखी भवति, यदा स नीरोगो भवति। तदैव स प्रयत्नं पुरुषार्थमपि कर्तुं शक्नोति। यो मनुष्यो रुग्णो वर्तते, यस्य शरीरे वा शक्तिर्नास्ति, स कथमपि संसारस्य सुखमनुभवितुं न शक्नोति। शरीस्यारोग्यं नीरोगता वा व्यायामेन भवति। स्वस्था एव जनाः सर्वमपि कार्यकलापं धर्मादिकं च कुर्वन्ति। अत एवोक्तं महाकविता कालिदासेन-

शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्।

स्वास्थ्यस्योपयोगिता सर्वत्रैव दृश्यते। ये स्वस्था हृष्टाः पुष्टाश्च भवन्ति, ते सोत्साहं स्वीयं कर्म कुर्वन्ति। ते न कुतश्चिद् भीता भवन्ति। सभासु समाजेषु च तेषां शरीरं वीक्ष्य जनाः प्रसन्ना भवन्ति। ये रुग्णा निर्बला भवन्ति, ते सर्वत्र हीनदृष्ट्याऽवलोक्यन्ते। तेषां सर्वत्रापमानो भवति। ते निर्बलत्वात् सदा दुःखमेव लभन्ते। अतो यथा विद्याध्ययनादिकमावश्यकम्, तथैव स्वास्थ्यरक्षापि अतीवावश्यकी विद्यते।

स्वास्थ्यलाभाय व्यायामा बहुविधाः सन्ति। भ्रमणं धावनं क्रीडनं तरणम् अश्वारोहणं मल्लयुद्धम् इत्यादयः। बालकेभ्यः क्रीडनं धावनं तरणं च विशेषतो हितकराणि सन्ति। क्रीडासु च पादकन्दुकेन क्रीडनं, यष्टिकया (हॉकी) क्रीडनम्, करकन्दुकेन (वॉली बॉल) वा क्रीडनं विशेषतो रुचिकरं स्वास्थ्यवर्धकं चास्ति। प्रातः सायं च भारतीया व्यायामा अपि करणीयाः, यथा-दण्डसाधनम् (डंड), उत्थानोपवेशनक्रिया (बैठक) योगासनेषु च कानिचिदासनानि। योगासनेषु पश्चिमोत्तानासनं मयूरासनं शरीरासनं धनुरासनं सर्वांगासनं शीर्षासनं च सर्वेभ्य एव मनुष्येभ्यः स्वास्थ्यलाभाय विशेषतो हितकराणि सन्ति। बालिकाभ्याः स्त्रीभ्यश्च भ्रमणं विशेषोपयोगि वर्तते। युवकेभ्योऽश्वारोहणमपि हितकरमस्ति। वृद्धेभ्यो भ्रमणं योगासनानि च लाभप्रदानि सन्ति। प्राणायामस्तु सर्वैरपि अवश्यमेव स्वास्थ्यलाभाय करणीयः। अन्ये व्यायामः शक्त्यनुसारं करणीयाः। स्वास्थ्यलाभाय शरीरस्य स्वच्छताऽपि अत्यावश्यकी वर्तते। अतः प्रतिदिनं स्नानमपि अवश्यं करणीयम्।

सर्वैश्वर्यसमन्विताः धनधान्यपरिपूर्णा अपि जनाः स्वास्थ्यस्याभावे स्वकीयस्य ऐश्वर्यस्य सुखं नानुभवितुं शक्नुवन्ति। अतः सर्वैरपि स्वास्थ्यलाभाय नीरोगतायै च प्रतिदिनमवश्यं व्यायामः करणीयः।

रचनानुवादकौमुदी

(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा वैदिक सत्संग सम्पन्न

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा, कोटा द्वारा दिनांक 2 अक्टूबर 15 को वैदिक सत्संग कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ. बलवंत शास्त्री ने अपने सम्बोधन में कहा सत्संग से ज्ञान प्राप्त होता है तथा गुणों का विकास होता है। ज्ञान ही मुक्ति दिलाता है एवं दरिद्रता दूर करता है। पं. भीष्म आर्य ने भजन के माध्यम से ओम की व्याख्या की। सहसंयोजक श्री देवेन्द्र यादव ने बताया कि दो से चार अक्टूबर तक आयोजित वैदिक सत्संग का प्रारम्भ वैदिक बिरधीचन्द के पौरोहित्य में यज्ञ से हुआ जिसमें श्री मिश्री लाल, आशा यादव सहित आर्य जनों ने वेदमंत्रों की आहूतियां दीं। **-अरविन्द पाण्डेय, कार्यालय सचिव**

आर्य समाज डोरी वालान का 65वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज डोरीवालान का 65वां वार्षिकोत्सव ऋग्वेद महायज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। महायज्ञ को श्री गवेन्द्र शास्त्री द्वारा सम्पन्न कराया गया। करोल बाग आर्य समाज के प्रधान श्री कीर्ति शर्मा ने आर्य/हिन्दू जगे तो विश्व जगेगा विषय को बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में महापौर श्री रविन्द्र गुप्ता, विधायक श्री विषेश रवि, श्रीमती पूर्णिमा विद्यार्थी, श्री राजेश भाटिया, श्रीमती श्याम बाला, श्रीमती मधु खुराना एवं क्षेत्र की सामाजिक संस्थाओं से जुड़े बन्धु उपस्थित हुए। समाज के युवा प्रधान श्री वागीश शर्मा ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी आगन्तुकों एवं गणमान्य व्यक्तियों का धन्यवाद प्रकट किया। **-मंत्री**

दर्द अभी क्यों...?

...नयनतारा सहगल जी उत्तर प्रदेश में दादरी की घटना से दुखी हैं और उन्होंनें अपना दुख व्यक्त करते हुए लिखा है, ' दिल्ली से सटे दादरी में मोहम्मद इखलाक नाम के शख्स की गौमांस खाने की अफवाह के बाद बर्बर तरीके से कत्ल कर दिया जाता है, इन सब मामलों में इंसाफ की हार हुई है। इस घटना ने मुझे घुटनों पर ला दिया है।'' इनके साथ-साथ एक और लेखक अशोक बाजपेयी इस घटना से दुखी होकर अपना साहित्य सम्मान लौटाने की घोषणा कर चुके है। ...

इंग्लिश साहित्यकार नयनतारा सहगल ने केन्द्र सरकार पर देश की सांस्कृतिक विविधता कायम न रख पाने का आरोप लगाते हुए उन्हें 1986 में दिया गया साहित्य अकादमी पुरस्कार लौटाने की घोषणा की है। गौरतलब है नयनतारा सहगल एक भारतीय अंग्रेजी साहित्य लेखिका हैं, मई 1927 में जन्मी नयनतारा पंडित जवाहरलाल नेहरु की बहन विजय लक्ष्मी पंडित की पुत्री है।

नयनतारा सहगल जी उत्तर प्रदेश में दादरी की घटना से दुखी हैं और उन्होंने अपना दुख व्यक्त करते हुए लिखा है, 'दिल्ली से सटे दादरी में मोहम्मद इखलाक नाम के शख्स की गौमांस खाने की अफवाह के बाद बर्बर तरीके से कत्ल कर दिया जाता है, इन सब मामलों में इंसाफ की हार हुई है। इस घटना ने मुझे घुटनों पर ला दिया है।'' इनके साथ-साथ एक और लेखक अशोक बाजपेयी ने इस घटना से दुखी होकर अपना साहित्य सम्मान लौटाने की घोषणा कर चुके हैं। अब प्रश्न यह है कि इन सबको विरोध जताने के लिये इखलाक की मृत देह ही क्यों नजर आयी? जबकि देश इससे पहले भी सैंकड़ों धार्मिक, जातीय उन्माद झेल चुका है। नयनतारा जी को 1986 में पुरस्कृत किया गया था और अक्टूबर 1989 में बिहार में भागलपुर दंगा हुआ क्या उस समय नयनतारा जी के घुटने नही टिके! 1989-90 में कश्मीर में हजारों कश्मीरी पंडितों को धार्मिक उन्माद के चलते मारा गया उनके घर-बार छीने गये बंग्लादेश में हिन्दुओं पर अत्याचार हुए तब आपका हिंसा का मापदंड क्या था? इसके बाद 1992 अयोध्या विवादित ढांचा इसके बाद मुँबई में श्रृंखलाबद्ध बम विस्फोट हजारों लोगों की जान मुस्लिम धार्मिक उन्माद में चली गयी जिसे वह बाबरी मस्जिद का बदला कहते हैं। तब यह सम्मान क्यों नहीं लौटाया अभी क्यों? इसके बाद सितम्बर 2008 में दिल्ली दहल गयी। सैकड़ों लोगों की जाने गयी। घायल हुए। देश के लोकतंत्र के मन्दिर संसद भवन पर हमला हुआ देश के जवान शहीद हुए, मुजफ्फरनगर में धार्मिक उन्माद के कारण दो भाईयों की सैकड़ों लोगों ने पीट-पीट कर हत्या कर दी। लोग प्रशासन से कार्यवाही की मांग करते रहे तब क्या आपके घुटने नहीं टूटे? धार्मिक सांस्कृतिक भावनाएं किसी एक समूह समुदाय की बपौती नहीं है न ही लोग हमेशा किसी के कहने पर हिंसा पर उतारु होते हैं यदि पैगम्बर के चित्र बनाना किसी देश में कानूनी रूप से अनुचित नहीं लेकिन मुस्लिम समुदाय के लिये यह धार्मिक रूप अनुचित है यदि वह लोग चित्र बनाने पर दूसरे देशों में भी जाकर मार सकते हैं तो वही स्थिति भारत में गाय को मार कर खाने पर बन सकती है क्या हिन्दू धर्म का मजाक बनाने वाले हिंसा की चपेट में नहीं आ सकते?

दादरी की घटना ने अकेली नयनतारा को ही नहीं तोड़ा बल्कि इससे पूर्व शोभा डे हैं। 1948 में मुम्बई में ब्राह्मण परिवार में जन्मी शोभा डे भी लेखिका कही जाती हैं, काल्पनिक कहानियों में अश्लीलता के घालमेल का सिरका डालकर अचार तैयार करने तक सीमित हैं। उसने अभी-अभी बीफ खाया है वह खुद कहती है कि, ''मैंने अभी-अभी गौमांस खाया है, आओ मेरा कत्ल कर दो।'' यदि उसके मुताबिक कहूँ तो ट्वीट के बाद मीडिया बैचेन रही होगी कि काश! उसकी तरफ कोई गुब्बारा ही उछाल दे और मीडिया को काम मिल जाये। दरअसल दुनिया में रोजाना हजारों लोग मरते हैं पर इखलाक की मौत मलाई है इन कथित बुद्धिजीविता के ठेकेदारों के लिये है, इंसान इनके लिए मौसमी फल है मौसम आते ही टूट पड़ो गले तक ठूंस लो और फिर मौखिक रूप से उल्टियां करो। इन सब के बयान के बाद एक तीसरे स्वामीनाथन एस अंकलेश्वर अय्यर यह दक्षिण भारत के ब्राहम्ण कुल से है यह कहते हैं, 'कि एक उदारवादी के तौर पर मैं हमेशा इस बात का प्रबल समर्थक रहा हूं कि किसी भी व्यक्ति को उसके मन की चीज खाने की अनुमति होनी चाहिए। लेकिन मैं भवभूति के नाटक के आधार पर ही यह दावा करता हूँ कि बीफ खाने का अधिकार प्राचीन हिंदू परंपरा का रहा है। एक ब्राह्मण के तौर पर मैं वशिष्ठ मुनि के पदचिह्नों पर खुशी से चल रहा हूं। इन लोगों को देखकर मुझे सहज प्रतीत होता है कि ये अजीब किस्म के बौद्धिक आतंकवाद से पीड़ित लोग हैं जो मांसाहार के सेवन से अपनी मति भ्रष्ट कर भारत की अतिप्राचीन संस्कृति ऋषि-मुनियों तक को मांसाहार से लपेट रहे हैं। अब प्रश्न यह है इन घटना से दो वर्ग सामने निकल कर आये एक तो वह गौमांस के प्रतिबंध से दुखी थे दूसरे वे जिनके जेहन में एक विशेष वर्ग के लिये अकूत सांत्वना छिपी थी। चलो हम मानते हैं यह घटना निंन्दनीय है पर इतना भी निंदा का विषय नहीं था कि पूरे विश्व में आंसुओं के कटोरे उठाये फिरे; हिंदू उन्मादी नहीं है यदि होता तो कश्मीरी पंडितों के साथ केरल में बंगाल में आसाम, में वह रोज धर्म की चक्की में नहीं पिसता फिर भी किसी घटना पर यदि कहीं हिंसा पर उतारू होता है तो उसके लिये भारतीय संविधान का पालन भी करता है न कि पूरे विश्व में भारत को बदनाम करता फिरता नयनतारा जी आप कश्मीरी पंडित हो अच्छा होता आपके घुटने उन विस्थापित पंडितों के लिये दर्द करते जो 25 साल से अपने सगे संबधियों को इस्लामिक हिंसा की भट्टी में खो कर अपना विस्थापित जीवन जी रहे हैं न कि इस घटना पर जिसमें प्रशासन और मीडिया और राजनैतिक दलों ने अपनी भूमिका अदा कर दी।

-राजीव चौधरी

आर्यसमाज हिम्मतपुर काकामई में आर्य सम्मेलन आयोजित

आर्यसमाज हिम्मतपुर काकामई एवं आर्यसमाज करुआमई जिला-एटा उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान में दिनाँक 25 से 27 सितम्बर 2015 तक आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। सम्मलेन यज्ञ, भजन एवं प्रवचन के साथ संपन्न हुआ। आर्य सम्मलेन के मुख्यअतिथि राजस्थान के राज्यपाल कल्याण सिंह के बेटे व एटा से सांसद राजवीर सिंह (राजू भैया) पहुंचे उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि आर्यसमाज विश्व में एकमात्र सबसे ज्यादा समाज व देश के लिए कार्य करने वाला संगठन है। उन्होंने महर्षि दयानन्द जी द्वारा देश समाज के लिए किये गए कार्य की सराहना करते हुए कहा कि आज भी अब हमें जरूरत महसूस होने लगी है की ऋषि दयानंद जैसा कोई और संत आये और देश में फैले अन्धविश्वास व कुरीतियों को फिर से मिटाये।

-मायाप्रकाश आर्य

वानप्रस्थ साधक आश्रम रोजड़ में क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन, रोजड़, गुजरात दिनांक 15 से 22 नवम्बर 2015 से क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन कर रहा है। शिविरार्थी 15 नवम्बर को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुंच जावें। शिविर शुल्क 1000/- है। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-मो. 09427059550, दूरभाष : 02770-287417, 291555

मांडले (बर्मा) म्यांमार में नये आर्य समाज भवन का उद्घाटन

बौद्ध देश म्यांमार के मांडले शहर में 26 सितम्बर 15 को आर्य समाज के नये भवन का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर पूरे देश के लगभग 30 आर्य समाजों के आर्य बंधुओं सहित अनेक हिन्दू संस्थाओं के प्रमुखों व सदस्यों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

तीन मंजिला वातानुकूलित इस आर्य समाज भवन के निर्माण में लगभग 50 करोड़ च्याट बर्मा मुद्रा व्यय हुए हैं जोकि केवल मांडले के आर्य समाजी भाईयों से ही दान में लिये गये थे। भवन का उद्घाटन भारत से पधारे श्री आनन्द पुरुषार्थी जी द्वारा वैदिक यज्ञ से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में मांडले के धार्मिक मामलों के बौद्ध केबिनेट मंत्री श्री थान सो मियम्ब जी ने अपने उद्बोधन में हिन्दुओं को बर्मा देश के लिये अनुकूल बताया और कहा इस देश में मुस्लिमों के कुछ अनुचित क्रिया-कलापों के कारण उन पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध हैं तथा यहां विगत 1980 के बाद से सभा किसी विद्वान को आमंत्रित नहीं कर पाई थी। आचार्य जी ने वेदों के आविर्भाव से लेकर आर्यों के पराभव तक और वर्तमान परिस्थिति में वैदिक धर्म की नितांत आवश्यकता को प्रस्तुत किया। उद्बोधन के बाद मंत्री जी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट की गयी। इसके अतिरिक्त 6 अन्य आर्य संस्थाओं में आचार्य जी के व्याख्यान हुए और इंडियन हाई कमिश्नर श्री गौतम मुखोपाध्याय जी के निवास पर जाकर उनसे भेंट कर उनको वैदिक साहित्य भेंट किया गया।

आर्य सन्देश सदस्य ध्यान दें

आर्य सन्देश के सदस्यों से अनुरोध है यदि आपकी सदस्यता समाप्त हो रही है तो कृपया उसका पुन: नवीनीकरण करवा लें जिससे आपको आर्य सन्देश नियमित प्राप्त होता रहे। आर्य सन्देश की वार्षिक सदस्यता शुल्क 250/- व आजीवन सदस्यता शुल्क मात्र 1000/- है । आप अपना धनादेश/डी.डी. आर्य सन्देश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर प्रेषित करें। **-सम्पादक**

वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में भजन संध्या एवं निर्देशिका का विमोचन

30 सितम्बर 2015 वेद प्रचार मण्डल उत्तरी-पश्चिमी दिल्ली की ओर से आर्य समाज सरस्वती विहार में भजन संध्या का आयोजन किया गया इस अवसर पर आर्य निर्देशिका का विमोचन श्री ओम प्रकाश, श्री अरुण आर्य, मण्डल प्रधान श्री सुरेन्द्र आर्य, महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर, श्री सुरेन्द्र चौधरी, श्री व्रत पाल भगत, सुश्री उर्मिल आर्य, श्रीमती सुधा गुप्ता एवं श्रीमती आरती खट्टर की उपस्थित में हुआ। आर्य गुरुकुल रानी बाग एवं कन्या गुरुकुल सैनिक विहार के छात्र-छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

-जोगेन्द्र खट्टर, प्रधान

वैदिक वीरांगना दल द्वारा 108 कन्याओं का उपनयन संस्कार

जयपुर: दिनांक 14 सितम्बर 2015, वैदिक वीरांगना दल द्वारा 108 कन्याओं का उपनयन संस्कार आयोजित किया गया। कन्याओं ने वेदमंत्रोंके साथ यज्ञ करते हुए जनेऊ धारण किये। दल की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती अनामिका शर्मा ने बताया कि राजस्थान के विभिन्न जिलों की बालिकाएं व महिलाएं उक्त समारोह में शामिल हुई। **-अनामिका शर्मा, राष्ट्रीय अध्यक्ष**

पृष्ठ 1 का शेष **प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी ...**

गुरुदास जी ने अपनी रचना 'इकतालीसवीं बार' में गुरु गोविंदसिंह से संबंधित संस्मरण में लिखा है-

निज फते बुलाई सति गुरु, कीनी उज्यारा।
झूठ कपट सब छिप गए, सब सज वरतारा।।
फिर जप 'होम' ठहराए कर निज धर्म सँवारा।
तुर्क दुंद स्तभ उठ गयो, रुचियो जैकारा।।२८।।

अर्थात् दसवें श्री गुरु गोविंदसिंह जी ने अपनी विजय की घोषणा की। अंधेरगर्दी समाप्त की, न्याय का प्रकाश फैलाया और हवन- यज्ञ का प्रचार किया।

चीफ खालसा दीवान के उपदेशक श्री हरनामसिंह ने अपनी पुस्तक 'सच्ची मुहब्बत' में लिखा है-

'यज्ञ' 'होम' हीवना न हिंद में भूल पाता,
फूलते निशान नहीं आज हिंदुस्तान के।।
कहत हरनाम सिंह न इसमें झूठ जानो,
तीर जो न छूटते गोविंदसिंह जवान के।।

अर्थात् यदि योद्धा गुरु गोविंदसिंह के तीर न छूटते तो यज्ञ, होम और धर्म के फलने-फूलने का चिह्न दिखाई न पड़ता।

नामधारी सिखों के 'नित्यनियम गुटके' में लिखा है- ''साहिब गुरु गोविंद सिंह की हवन-यज्ञ के साथ ऐसी प्रीति थी कि आपने सवा लाख दमड़े की सामग्री एकत्र करके नैना देवी के मंदिर में हवन किया था।''

'पंथ प्रकाश निवास' में भाई केशवदास जी ने गुरु गोविंदसिंह का अभिमत व्यक्त करते हुए लिखा है-

जब हम हवन यज्ञ करवै हैं,
खुश हो जल बहु बरसै हैं।
दुर्भिक्ष नसै अन्न बहु थैहै।
सुकृत सब करदे लग जैहै।
नसै अविद्या विद्या अईहैं।
शूरवीरता दृढ़ प्रगटई है।
वर्ण आगामी जन है जेते।
कायरता कर पर्ण तेते।
उन्हें हवन की पवन लगे जब।
शेर विघा उन से होइये सब।
प्रभुता देह आरोग्य क्रांति विजय।
ज्ञान संतति सुखदाती गुण सब।
बालक भाग्यवान प्रकटै है।
रोग शीतला आदि नसैहै।
कामादि जो आसुरी संपत्ति।
यज्ञ को लखकर कंपति।
उत्तम गुण सत्यादिक जे है।
बावन कह वेद ऋग में है।
सो अवश्य जग में प्रकटे हैं।
होम यज्ञ विधिवत् जब ये हैं।।

उपर्युक्त पद सरल हैं। उनका भावार्थ समझने पर पता चलता है कि सिख धर्म के गुरुओं को यज्ञ-हवन में कितनी सघन आस्था थी।

Continue from last issue

Glimpses of the Rig Veda

Mind and Soul-I

"The powerful Soul gains his strength in three virtuous directions : physical, mental and spiritual. He sharpens his will power and strikes the first born of the evil impulse, the sexual one."

"The wounded, but arrogant sinful Mind, defies the mighty Soul, who scatters and weakens the dark and blind impulses; but the animated sinful impulses, again gather and break the barriers set by the Soul".

"Thoughts that delight the Soul] now flow over the Mind, the prostrated and wounded, as the waters of a river, with her breached banks, flow over the fields. The Mind, however obstructs such flow."

वृषायमाणोऽवृणीत सोमं त्रिकद्रुकेष्वपिबत्सुतस्य।

आ सायकं मघवादत्त वज्रमहन्नेनं प्रथमजामहीनाम्।। (Rv.I.32.3)

अयोद्धेव दुर्मद आ हि जुह्वे महावीरं तुविबाधमृजीषम्।

नातोरीदस्य समृतिं वधानां सं रुजानाः पिपिष इन्द्रशत्रुः।।(Rv.I.32.6)

नदं न भिन्नममुया शयानं मनो रुहाणा अति यन्त्यापः।

याश्चिद् वृत्रो महिना पर्यतिष्टितासामहिः पत्सुतः शीर्बभूव।।(Rv.I.32.8)

Vrsayamano vrnita somam trikadrukesu apibat sutasya.

a sayakam maghavadatta vajram ahann enarhprathamajam ahinam..

Ayoddheva durmada a hi juhve maha viram tuvibadham rjisam.

natorid asya samrtim vadhanam sam rujanah pipisa indrasatruh..

Nadarm na bhinnam amuya sayanam mano ruhana ati yanty apah.

yas cid vrtro mahina paryatisthat tasam ahih patsutah sirbabhuva..

Mind and Soul-II

"Good impulses, the beloved of the Soul, are obstructed by greed, like cows stolen by wicked people, and kept hidden, But by destroying the strength of the demoniac forces, the Soul throws open the cave that had blocked the path of noble impulses to reach the sphere of the Soul."

"When you, O powerful Soul, unaided by any, return the blow inflicted by the evil mind, you become furious like a horse's tail. You rescue good human impulses. O hero, you win our sweet devotion.You cause the spiritual streams of seven oceans, i.e. love, truth, benevolence, austerity, contentment, generosity and knowledge to flow freely."

"Thus, O powerful Soul, you become the sovereign of all that is movable and immovable, of impulses and emotions, peaceful or aggressive. Now you are the monarch of men. All activities are centred within you as the circumference encompasses the spokes of a wheel."

दासपत्नीरहिगोपा अतिष्ठन्निरुद्धा आपः पणिनेव गावः।

अपां लिमपिहितं यदासीत् वृत्रं जघन्वां अप तद्वार।।(Rv.I.32.11)

अश्व्यो वारो अभवस्तदिन्द्र सृके यत्त्वा प्रत्यहन्देव एकः।

अजयो गा अजयः शूर सोममवासृजः सर्तवे सप्त सिन्धून्।।(Rv.I.32.12)

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा शमस्य च शृङ्गिणो वज्रबाहुः।

सेदु राजा क्षयति चर्षणीनामरान्न नेमिः परि ता बभूव।।(Rv.I.32.15)

Daspatnir ahigopa atisthan niruddha apah panineva gavah.

apam bilam apihitam yad asid vrtram Jaghanvan apa tad vavara..

Asvyo varo abhavas tad indra srke yat tva pratyahan deva ekah.

ajayo ga ajayah sura somam avasrjah sartave sapta sindhun..

Indroyato vasitasya raja samasya ca srngino vajrabahuh.

sed u raja ksayati carsaninam aran na nemih pari ta babhuva..

Hymn to Death-I

Book X,nhymn 18 of the Rigveda is addressed to death. The first verse reads :

"O Death, go hence, depart to a distant path that is your own. Pursue the path which is distinct from the divine. I speak unto you; look with your eyes and hear with your ears. Pray, you injure not our offsprings and harm not our fellowmen. May the living ones never think of the departed and the dead. May they live an active and exuberant life with humility and dedication."

Death is personified as a deity with eyes to see and ears to hear. He is advised not to tread on the path of men with divine qualities. Fear of death assails ordinary men. To the enlightened ones, death has no existence. It is the fear associated with death that is wrongly comprehendes death. A sinful person has all symptoms of a dying man. The inactive laggard are lifeless. The more untruthful a man becomes, the more is he threatened by the fear of death. May the living ones move forward, dancing, laughing and cooperating with others and may the life be lived without any fear of death in all its fullness, says the verse.

परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते स्व इतरो देवयानात्।

चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजां रीरिषो मोत वीरान्।। (Rv.x.18.1)

param mrtyo anu parehi pantham yas te sva itaro devayanat.

caksusmate srnvate te bravimi ma nah prajam ririso mota viran..

To Be Continued...

प्रेरक प्रसंग

इन्हें सोने दो

आर्य समाज धारूर महाराष्ट्र का उत्सव था। श्री पण्डित नरेन्द्रजी हैदराबाद से पधारे। रात्रि में सब विद्वान् आर्य समाज के प्रधान पण्डित आर्य भानुजी के विशाल आंगन में सो गये। इनमें से एक अतिथि ऐसा था जिसे रात्रि को अधिक ठण्ड अनुभव होती थी परन्तु संकोचवश ऊपर के लिए मोटा कपड़ा न मांगा।

प्रातःकाल सब लोग बाहर शौच के लिए चलने लगे तो उस अतिथि का नाम लेकर एक ने दूसरे से कहा-उन्हें भी जगा लो, सब इकट्ठे चलें। इस पर पण्डित नरेन्द्र जी ने कहा-ऊंचा मत बोलो, जाग जाएंगे। जगाओ मत, सोने दो। इन्हें रात को बड़ी ठण्डी लगी। सिकुड़े पड़े थे। मैंने ऊपर शाल ओढ़ा दिया।

ये शब्द सुनकर वह सोया हुआ व्यक्ति जाग गया। वह व्यक्ति इन्हीं पंक्तियों का लेखक था। पण्डित नरेन्द्र जी रात्रि में कहीं लघुशंका के लिए उठे। मुझे सिकुड़े हुए देखकर ऊपर शाल डाल दिया। इस प्रकार रात्रि के पिछले समय में अच्छी निद्रा आ गई, परन्तु सोये हुए को यह पता न लगा कि किसने ऊपर शाल डाल दिया है। पण्डित नरेन्द्र जी ने आर्य समाज लातूर के उत्सव पर भी एक बार मेरे ऊपर रात्रि में उठकर कपड़ा डाला था, जिसका पता प्रातः जागने पर ही लगा। ऐसी थी वे विभूतियां जिनके कारण आर्य समाज चमका, फूला और फला। इन्हें दूसरो का कितना ध्यान था।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

बोध कथा

पकाने वाले का दुष्प्रभाव

रणवीर था फाँसी की कोठरी में। मैं उसे प्रतिदिन उपनिषद पढ़ाने जाता था। वह उपनिषदों का पाठ करता था। गायत्री मंत्र का जाप करता था। फाँसी की कोठरी में वह हर समय हँसता रहता था। परन्तु एक दिन मैंने उसे बहुत उदास देखा; पूछा- 'तू आज उदास क्यों है?'

उसने कहा-'कल से बार-बार एक भयानक चित्र मेरे सामने आता है। मैंने ऐसी बात कभी स्पप्न में भी सोची नहीं, परन्तु अब इस बात के अतिरिक्त कोई दूसरी बात जाप करते समय भी दिखाई नहीं देती। मैं तो दुःखी हो गया हूं। समझ में नहीं आता कि क्या हो गया है मुझे?'

मैंने पूछा-'क्या दिखाई देता है तुझे?'

रणवीर ने कहा-'आप तो जानते ही हैं, मैं अपनी माँ से बहुत प्यार करता हूं, परन्तु कल से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि एक ग्रामीण का मकान है, कच्चा मकान। चारदीवारी के भीतर एक सेहन है। सेहन के परे एक कोठरी। ऐसा प्रतीत होता है कि कोठरी में मेरी मां अपने बालों को खोले बैठी है, बालों को सुखा रही है। तभी मैं हाथ में तलवार लेकर सेहन में पहुंचा हूं। सेहन से एक कोठरी में चला गया हूं। अन्दर जाकर मैंने अपनी मां को बालों से पकड़ा है। उन्हें घसीटता हुआ बाहर के सेहन में ले आया हूं। माँ चिल्ला रही है और मैं उनके वक्षः स्थल पर तलवार से वार के ऊपर वार कर रहा हूं। वह रो रही है, चिल्ला रही है, लहूलुहान हो गई है, परन्तु मै। रुकने का नाम ही नहीं लेता। वह भयानक दृश्य मुझे बार-बार दिखाई देता है। अपनी ही मां के लिए ऐसी बातें मेरे मन में आयें, इससे तो अच्छा है कि मैं मर जाऊँ।'

मैंने सोचते हुए कहा-'कल तूने खाया क्या था?'

उसने कहा-'जेल का जो साधारण खाना मेरे लिए आता है, वही खाया था। अन्तर केवल इतना है कि कल जो भोजन खाया, वह पहले से अधिक स्वादिष्ट था। शायद कोई नया-नया रसोइया जेल में आया है। बहुत अच्छा भोजन बनाता है वह।'

इस बात से मेरे मन को सन्तोष नहीं हुआ। मैंने जेल के दरोगा महोदय से पूछा-'रणवीर को जो भोजन आप देते हैं, उसे कल किसने बनाया था?'

उसने बताया कि कल से एक नये कैदी को खाना बनाने पर लगाया है।

मैंने पूछा-'यह कैदी कौन है?'

उन्होंने उस कैदी का रिकॉर्ड मँगवाकर बताया कि-'उसे अपनी माँ को कत्ल करने के अपराध में आजीवन कारावास मिला है। वह एक गाँव में रहता था, कच्चे मकान में जहाँ चारदीवारी के भीतर एक सेहन था। सेहन के परे एक कोठरी थी। उस कोठरी में उसकी मां नहाने के पश्चात् अपने बाल सुखा रही थी कि यह व्यक्ति, जो उसके धन पर अधिकार करना चाहता था, तलवार लेकर सेहन में आया। वहाँ से कोठरी में गया। माँ को घसीटता हुआ सेहन में ले आया। वहाँ बार-बार तलवार के वार करके उसे मार डाला। मरने वाली के क्रन्दन से लोग आ गये। उन्होंने माँ के हत्यारे को पकड़ लिया।'

मैं यह बात सुनकर चकित रह गया। जिस व्यक्ति ने भोजन बनाया, उसके मन के विचार किस प्रकार भोजन करने वाले के मन में पहुंच गये-यह देखकर मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा। मैंने उससे कहा-'रणवीर का भोजन उस व्यक्ति से मत बनवाइए।'

वे सज्जन व्यक्ति थे, मान गये। तीसरे दिन मैं रणवीर के पास पहुंचा तो पूछा-'अब तो वह भयानक दृश्य दिखाई नहीं देता?'

वह प्रसन्न था। हंसता हुआ बोला-'अब तो दिखाई नहीं देता। अब तो मन फिर से एकाग्र होने लगा है।'

यह है अन्न का प्रभाव।

बुरी कमाई का ही नहीं, बुरे व्यक्ति के हाथ का बनाया हुआ अन्न भी मन पर प्रभाव डालता है।

साभारः बोध कथाएं

नोटः यह पुस्तक सभा के वैदिक प्रकाशन विभाग में उपलब्ध है। प्राप्त करने के लिए मो. 09540040339 पर संपर्क करें।

12वें आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन हेतु अपने विवाह योग्य बच्चों के नाम पंजीकृत कराएं

परिचय सम्मेलन दिनांक 6 दिसम्बर 2015 आर्य समाज 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में आयोजित होगा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में देश के विभिन्न प्रान्तों के विभिन्न स्थानों पर 11 आर्य परिवार युवक -युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन बड़ी सफलता के साथ सम्पन्न हुए हैं जिसमें बहुत से आर्य परिवारों ने इन सम्मेलनों का लाभ उठाते हुए अपने बच्चों के विवाह संस्कार करवाये हैं। हम आपसे आशा के साथ प्रार्थना कर रहे हैं कि आपके स्वयं के बच्चे जो विवाह योग्य हैं अथवा आपके किसी परिचित के बच्चे जो किसी भी आर्य समाज से जुड़े हों, उनको भी यह सूचना पहुंचाकर 12वें आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करें। यह सम्मेलन 6 दिसम्बर 2015 को आर्य समाज 15 हनुमान रोड नई दिल्ली-110001 में प्रात: 10 बजे होना निश्चित हुआ है। आप अपने फार्म भरकर 20 नवम्बर तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा में भेज सकते हैं। आप इस फार्म को सभा की वेब साईट www.thearyasamaj.org/aryasandesh से डाउन लोड भी कर सकते हैं। फार्म की छाया प्रति भी मान्य होगी। इस सम्मेलन से जहां महर्षि दयानन्द जी के कथनानुसार ''युवक-युवती अपने गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार ही परस्पर विवाह करें'' का यह कदम आगे बढ़ाने में सहायक सिद्ध होगा वहीं पर आर्य परिवारों एवं युवा पीढ़ी को आर्य समाज से जोड़ने का भी एक महत्वपूर्ण कार्य सिद्ध होगा। फार्म का नमूना नीचे प्रकाशित है।

: निवेदक :

प्रकाश आर्य	**विनय आर्य**	**अर्जुन देव चड्ढ़ा**	**एस.पी.सिंह,**
मंत्री	महामंत्री	राष्ट्रीय संयोजक	संयोजक दिल्ली राज्य
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**	**आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन**	
मो. 09826655117	मो. 09958174441	मो. 09414187428	मो. 09540040324

: प्रांतीय संयोजक :

गुजरात, सुरेश चन्द्र अग्रवाल-09824072509; राजस्थान, अमरमुनि -09214586018; उत्तर प्रदेश, डॉ. अशोक आर्य -09412139333; आन्ध्र प्रदेश, डॉ. धर्मतेजा-09848822381, छत्तीसगढ़, दीनानाथ वर्मा -09826363578; महाराष्ट्र, डॉ. ब्रह्ममुनि -09421951904; उत्तराखण्ड, विनय विद्यालंकार-09412042430; विदर्भ, कृष्ण कुमार शास्त्री- 09579768015; जम्मू-कश्मीर, राकेश चौहान- 09419206881; हरियाणा, कन्हैयालाल आर्य-09911179073, हिमाचल प्रदेश, रामफल आर्य-09418277714; ओडिशा, स्वामी सुधानन्द-0986133060; मध्य भारत, डॉ. दक्षदेव गौड़-09425907070; पंजाब, दिनेश शर्मा-09872880807; महिला संयोजिका, वीना आर्या- 09810061263; रश्मि वर्मा- 09971045191; विभा आर्या-09873054398

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2, में अथर्ववेद पारायण यज्ञ

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2, दिल्ली के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 25 अक्टूबर 2015 के मध्य अथर्ववेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार जी होंगे।

निवेदक- श्री हरवंश लाल शर्मा, प्रधान मो.09560466874; श्री ओम प्रकाश पाण्डेय मंत्री मो. 09873327258

आर्य समाज राजनगर पालम कॉलोनी का श्रावणी पर्व सम्पन्न

आर्य समाज राजनगर पालम कॉलोनी का श्रावणी पर्व (वेद प्रचार पर्व) दिनांक 25 से 27 सितम्बर 2015 को सम्पन्न हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि कर्नल देवेन्द्र सहरावत विधायक व पूर्व विधायक धर्मदेव सोलंकी और दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य थे। कार्यक्रम में नौजवानों व महिलाओं की उपस्थिति सराहनीय रही।

-रतन आर्य, मंत्री

आर्य समाज ग्राम तुमोला मथुरा का वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज तुमोला ग्राम जिला मथुरा का वार्षिकोत्सव दिनांक 25 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक आचार्य देशराज शास्त्री द्वारा यज्ञ से संपन्न हुआ। मुख्यातिथि स्वामी ब्रह्मानन्द, स्वामी आत्मानन्द, स्वामी धर्मानन्द एवं भजनोपदेशक श्री बालकृष्ण (आर्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री चत्रसिंह व पूर्ण सिंह ने भजन प्रस्तुत किए। संयोजक श्री जवाहर सिंह आर्य व श्री बलराम के सानिध्य में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

पंजीकरण संख्या : ।। ओ३म्।। रसीद संख्या :

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

12 वां आर्य परिवार युवक-युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सम्मेलन कार्यालय : 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001 टैलिफैक्स :- 011-23360150, 23365959,
Email: aryasabha@yahoo.com website : www.thearyasamaj.org

पंजीकरण प्रपत्र

"आवेदक अपना फोटो अनिवार्य रूप से लगाएं।"

: व्यक्तिगत विवरण :

1. युवक/युवती का नाम :.....गोत्र.....
2. जन्मतिथि:..... स्थान : .....समय :.....
3. रंग..... वजन ..... लम्बाई.....
4. योग्यता (शैक्षणिक एवं अन्य) : .....
.....
5. युवक/युवती सेवारत, व्यवसाय में है तो उसका विवरण/ पता .....
..... मासिक आय .....

: पारिवारिक विवरण :

6. पिता/संरक्षक का नाम ..... व्यवसाय: ..... मासिक आय.....
7. पूरा पता: .....
.....
दूरभाष :..... मोबा :..... ईमेल: .....
8. मकान निजी/किराये का है.....
9. माता का नाम :..... शिक्षा :..... व्यवसाय : .....
10. भाई: विवाहित ..... अविवाहित: ..... बहन : विवाहित ..... अविवाहित :.....
11. उम्मीदवार/अभिभावक किस आर्यसमाज के सदस्य हैं? .....
12. युवक/युवती कैसी चाहिए (संक्षिप्त टिप्पणी दें) .....
13. युवक/ युवती यदि इनमें से हो तो सही पर (✔) लगाएं : विधुर :☐ विधवा:☐ तलाकशुदा:☐ विकलांग:☐
14. विशेष: किसी और बात का उल्लेख करना चाहते हों तो उसे यहां संक्षेप में लिखें:.....
.....

दिनांक : ..... पिता/संरक्षक के हस्ताक्षर

नोट:1. कृपया इस फार्म के साथ निर्धारित रजिस्ट्रेशन शुल्क रु. 300/- का ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा भेजें अथवा **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि** सभा के नाम **एक्सिस बैंक खाता सं. 910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेजें।

नई दिल्ली 6 दिसम्बर 2015

परिचय सम्मेलन 6 दिसम्बर 2015 आर्य समाज, हनुमान रोड़-15, नई दिल्ली-110001 में आयोजित किया जाएगा। विशेष जानकारी हेतु राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढा (9414187428) अथवा दिल्ली संयोजक श्री एस. पी. सिंह (9540040324) से सम्पर्क करें।

2. विकलांग युवक-युवतियों तथा विधवा एवं तलाकशुदा युवतियों के लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क में 50% छूट होगी।
3. विवाह सम्बन्ध बनाने से पूर्व दोनों पक्ष अपनी सन्तुष्टि कर लें। सभा इसके लिए उत्तरदायी नहीं होगी।
4. आप इस फार्म को www.thearyasamaj.org से डाउनलोड कर भेज सकते हैं। फोटो कॉपी प्रति भी मान्य है।
5. पंजीकरण की अन्तिम तिथि 20 नवम्बर 2015 है। कृपया सुनिश्चत करें कि आपका फार्म 20 नवम्बर 2015 की सायंकाल तक सम्मेलन कार्यालय में अवश्य पहुंच जाए। इसके बाद प्राप्त होने वाले आवेदनों को तत्काल पंजीकरण के रूप में स्वीकार किया जाएगा तथा उनका विवरण सम्मेलन के बाद में प्रकाशित होने वाली विवरणिका में ही सम्मिलित होगा।
6. माता-पिता/अभिभावक रजिस्ट्रेशन शुदा पुत्र/पुत्री को सम्मेलन में अवश्य लावें। **कॉलम नं. 11 भरे बिना फार्म स्वीकार्य नहीं होगा।**

युवक और युवतियां परस्पर एक-दूसरे के गुण-कर्म और स्वभाव मिलने पर ही विवाह करें - *महर्षि दयानन्द सरस्वती*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

12 अक्टूबर से 18 अक्टूबर, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15 अक्टूबर/ 16 अक्टूबर, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 अक्टूबर, 2015

स्वास्थ्य चर्चा

बदलता मौसम और खांसी की समस्या

आवंला, मुल्हेटी पिसी 10-10 ग्राम मीठा सोडा 5 ग्राम को मिलाकर दो रत्ती दवा मलाई में रखकर प्रात: सायं गर्म पानी से लें। सूखी खांसी में राम बाण है।

आवंला छोटी पीपल, सेंधा नमक 10-10 ग्राम कूट छान कर आधा ग्राम शहद में मिलाकर दिन में तीन बार प्रयोग करें। ये गले की खराबी से उठने वाली खांसी में लाभदायक है।

आंखडे का बंद फूल और काली मिर्च 10-10 ग्राम पीसकर शहद में मिलाकर आधी काली मिर्च जैसी गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर एक-एक गोली प्रात: सायं गर्म पानी से लें।

3-4 हल्दी की गांठों को तोड़कर तवे पर भून कर पीस लें। फिर 3-3 ग्राम प्रात: सायं पानी से लें। सूखी-काली खांसी में लाभकारी है।

काली मिर्च 5 ग्राम पिपली 10 ग्राम अनार दाना 20 ग्राम को पीसकर गुड मिलाकर चने बराबर गोलियां बना छाया में सुखा कर एक-एक गोली दिन में दो तीन बार चूसें। खांसी दूर होगी।

फिटकरी 10 ग्राम को दरदरा कूट तवे पर भूने, भूनते समय केले के पेड का गूदा का पानी 100 ग्राम थोड़ा-थोड़ा कर डालते जायें। फिर उतार कर ठंडा कर पीस लें। एक वर्ष के बच्चे को एक चौथाई रत्ती दो साल के बच्चे को आधा रत्ती तीन साल के बच्चे को एक रत्ती शहद में मिलाकर प्रात: सायं चटाएं। खांसी दूर होगी।

आवंला, मुल्हेटी 25-25 ग्राम कूट पीस कर 5-5 ग्राम प्रात: सायं गर्म पानी से लें। इससे जमा कफ निकल जाता है।

साभार: चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

अधिकारी की आवश्यकता

प्रतिष्ठा में,

भारत की जनसंख्या 2015 के नये आंकड़ों के अनुसार हिन्दुओं की आबादी 80 प्रतिशत से भी नीचे आ गयी है। इसका समाधान हिन्दुओं में ज्यादा बच्चे पैदा करने से नहीं हो सकता, क्योंकि इससे देश पर और अधिक बोझ पड़ेगा, इसका दूसरा रास्ता यह है कि जो हिन्दू व्यक्ति लोभ लालच, दबाव या किसी अन्य कारणों से हिन्दू धर्म छोड़कर चले गए हैं। उन्हें पुन: वैदिक हिन्दू धर्म में लाया जाए। अंग्रेजों के आने के पश्चात् बहुत से व्यक्ति हिन्दू धर्म में वापस आना चाहते थे। परन्तु उस समय के हमारे धर्माचार्यों ने ऐसा नहीं होने दिया। महर्षि दयानन्द के आने के बाद स्थिति बदल गई और जो लोग इस्लाम व ईसाईयत में चले गए थे। उनको वापिस लाना उनके ऊपर उपकार होगा, क्योंकि वैदिक धर्म में जात-पात, छूआछूत, ऊंच-नीच के लिए कोई स्थान नहीं है। इस संदर्भ में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा चलाए गए शुद्धि आंदोलन में तीव्र गति लाने की आवश्यकता है और इसके लिए आज समय भी अनुकूल है।

हमारी हिन्दू धर्म प्रेमियों से प्रार्थना है कि जो व्यक्ति इस पुन: कार्य के लिए भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अधिकारी के नाते कार्य करने के लिए समय देने के इच्छुक हों वह अपने नाम, आयु, पता, शैक्षिक योग्यता व मोबाईल नम्बर लिखकर भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, शुद्धि सभा भवन, 6949 बिडला लाईन्स, कमला नगर, दिल्ली-07 के पते पर भेजें।

चतर सिंह नागर, मंत्री **हरबसं लाल कोहली, कार्यकारी प्रधान**

चुनाव समाचार

आर्य समाज बालीनगर, राजा गार्डन, नई दिल्ली

प्रधान - **श्री ईश्वर चन्द्र खन्ना**

मंत्री - **श्री अनिल कुमार वधवा**

कोषाध्यक्ष - **श्री ओम प्रकाश हंस**

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव

प्रधान - **मास्टर सोमनाथ आर्य**

मंत्री - **प्रभु दयाल जुटानी**

कोषाध्यक्ष - **नरवीर लाल चौधरी**

हरीश बत्रा जी को मातृ शोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व मंत्री एवं नाईटक्वीन के चेयरमैन श्री हरीश बत्रा जी की माता श्रीमती सुशीला बत्रा जी का निधन हो गया। वे 80 वर्ष की थीं। क्रिया रस्म 11 अक्टूबर 2015 सायं 3.30 बजे आर्य समाज आदर्श नगर सुशीला रोड, गली नम्बर 11 दिल्ली में आयोजित हुई।

गुरु विरजानन्द संस्कृत कुलम् का द्वितीय वार्षिकोत्सव कार्यक्रम-विवरणम्

1. ब्रह्मसत्र-महायाग:	3-4	सायं
2. प्रणव-ध्वजोत्तोलनम्	4-4.30	सायं
3. देव-वेदि-समारोहणम्	4.30-5	सायं
4. स्वागत-वन्दनाभिनन्दनम्	5-5.30	सायं
5. संस्कृत-कुल-प्रस्तुति:	5.30-6.30	सायं
6. धन्यवाद-कृतज्ञता-ज्ञापनम्	6.30-7	सायं
7. शान्ति-मन्त्र-माचनम्		
8. ऋषि-अन्नादनम्	7	सायं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह